यह कुरीतियाँ मिट रही हैं, मिटेंगी

श्रीराम शर्मा आचार्य

यह कुरीतियाँ मिट रही हैं, मिटेंगी

लेखक :

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : ६.०० रुपये

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक :
श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

यह कुरीतियाँ मिट रही हैं, मिटेंगी

अपव्यय एक स्पष्ट अनैतिकता है। जो व्यक्ति अपनी स्थिति से अधिक अनुपयुक्त कार्यों में खरच कर रहा होगा उसे अविवेकी कहा जाएगा। कुछ अविवेकी ऐसे भी होते हैं, जो एक सनक तक सीमित रहकर मनुष्य की मनोदशा को अस्त-व्यस्त करते रहते हैं। कुछ अविवेक ऐसे होते हैं जो सीधे भले ही अनैतिक न हों पर उनके परिणाम अनैतिक होते हैं। शराब पीना यों अपनी मरजी की अपने पैसे से खरीदी हुई वस्तु पीना मात्र एक साधारण-सी क्रिया है, उसमें दलील के लिए यह भी कहा जा सकता है कि अपनी जेब का पैसा चाहे जिस काम में खरच करने का अधिकार मनुष्य को है, फिर शराब के पीने में क्या बुराई? पर थोड़ा गंभीरतापूर्वक विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि दलील थोथी है। शराब पीने के जो दुष्परिणाम होते हैं, उनसे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिस्थितियाँ लड़खड़ा जाती हैं। मनुष्य न करने लायक काम करने लगता है, न कहने लायक बातें कहने लगता है। अस्तु, नशेबाजी को उसके दुष्परिणामों के कारण अवांछनीय ठहराया गया और उसका उपयोग हर धर्म ने निषिद्ध ठहराया।

विवाहों में होने वाला अपव्यय यों अपने पैसे को फूँककर मनोरंजन करने के व्यक्तिगत अधिकार की सीमा में ही दिखाई पड़ता है। कहा जा सकता है कि मनुष्य अपनी कमाई का चाहे जो उपयोग करे, उसमें किसी का क्या आता-जाता है। पर थोड़ी गंभीरता से सोचने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत जैसे गरीब देश में जहाँ हर व्यक्ति की औसत आमदनी रोटी, कपड़ा, शिक्षा, दवादारू, मकान जितनी अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकने जितनी भी नहीं है, वहाँ इस प्रकार का निरर्थक अपव्यय किया जाएगा तो उस लंबी रकम को जुटाने के लिए लोगों को अत्यधिक श्रम करने, अनिवार्य आवश्यकताओं

में कटौती करने, अनीतिपूर्वक पैसा जुटाने, ऋण ले लेने, उपयोग की आवश्यक वस्तुएँ बेच देने, कुसमय के लिए बची हुई थोड़ी-सी पूँजी को समाप्त कर देने, जैसे अवांछनीय तरीके ही अपनाने पड़ते हैं। मानव स्वभाव की दुर्बलता के अनुसार एक की देखा-देखी दूसरे को ऐसे कार्यों के अनुकरण की इच्छा होती है, फलतः अमीरों की देखा-देखी गरीब भी वैसा ही करना अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं और एक अनुपयुक्त परंपरा चल पड़ती है।

यह अवांछनीय परिपाटी अगणित प्रकार के दुष्परिणाम उत्पन्न करती है। लड़के वालों का अनुचित लालच बढ़ता है। एक तो वैसे ही लालच को पाप का बाप माना गया है, फिर भी वह हराम में मिलने की संभावना हो तो आदमी और भी तेजी से पतित होता है। नौकरी में पैसा बढ़वाने के प्रश्न को लेकर मजदूर कभी मालिक की हत्या नहीं करते, क्योंकि उनकी माँग के पीछे नैतिक आधार है। पर चोर-डाकू तनिक से लोभ पर मनुष्यों की, छोटे-छोटे बच्चों तक की हत्या कर डालते हैं, क्योंकि उनकी माँग अनैतिक आधार पर अवलंबित है। अनैतिक माँग, अनैतिक काम करने पर विवश करती है। व्यापार में नफा-नुकसान होने पर मनुष्य उतना प्रसन्न चित्त नहीं होता, जितना कि दहेज जैसी हराम की कमाई के प्राप्त होने न होने पर। देखा जाता है कि यह लालच जहाँ पूरा नहीं होता, वहाँ निर्दोष वधू को अकारण, लोमहर्षक त्रास दिए जाते हैं। दहेज देना न देना लड़की के पिता पर निर्भर था, उसका दंड वधू को मिले, इसमें अनीति और हृदयहीनता की ही झाँकी होती है। जिसने लड़की दी है, उसे लड़के वालों की मनमरजी की रकम भी देनी चाहिए, यह उसकी विवशता का लाभ उठाना है। उस माँग के पीछे कोई नैतिक आधार नहीं। अनैतिक माँग का एक परंपरा के रूप में विकसित होना किसी समाज के लिए कलंक ही सिद्ध होता है और उसके दुष्परिणाम भी उसे भुगतने पड़ते हैं जैसा कि हम भुगत रहे हैं।

लड़के वाले पैसा माँगते हैं, लड़की वाले को देना पड़ता है। अब जब उस लड़की वाले को अपने लड़के का विवाह करना पड़ता है तब वह भी अपनी क्षति पूर्ति के लिए वैसे ही माँग करने लगता है। यह भूल जाता है कि लड़की के विवाह के समय उसे कितनी कठिनाई उठानी पड़ी थी या उठानी पड़ेगी। लड़की के विवाह के समय दहेज का विरोध करना और लड़के के विवाह का समय आने पर समर्थन करने लगना, इस दुमुँही नीति को अपनाने से समस्या का कोई हल नहीं निकल सकता।

हमें एक ही रास्ता अपनाना पड़ेगा, एक ही नीति निर्धारित करनी पड़ेगी। सामान्य विवेक का तकाजा यही है कि विवाह एक साधारण-सा घरेलू संस्कार मात्र रहे, उसमें सामान्य पर्व-उत्सवों जैसा छोटा आयोजन किया जाए और उपहारों का आदान-प्रदान मात्र प्रदर्शन के लिए नहीं वरन अपनी वास्तविक स्थिति के अनुरूप किया जाए। इसका प्रदर्शन न हो, ताकि वह किसी की प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा का प्रश्न न बनने पावे। समय की माँग है कि विवाहों का स्वरूप सादगी भरा हो, जिससे गरीब-अमीर किसी पर भी अनावश्यक दबाव न पड़े। इसी वातावरण में विवाहों के बारे में हर एक को निश्चिंतता रह सकती है। कन्या को सुयोग्य एवं सुशिक्षित बनाने पर ध्यान दिया जा सकता है। ऐसी ही परिस्थितियों में कन्या का जन्म एक भार एवं दुर्भाग्य मानने की मान्यता बदल सकती है और लड़कियों के प्रति जो हेय भाव रखने की, मनोवृत्ति है वह दूर हो सकती है। अवांछनीय कमाई के प्रति भी एक हिंदू गृहस्थ का आकर्षण तभी कम होगा जब वह विवाहों की ओर से निश्चिंतता अनुभव करेगा। आज की व्यापक अनैतिकता का एक बहुत बड़ा कारण हमारी प्रचलित कुरीतियाँ हैं। इनका उन्मूलन किए बिना हम न तो नीतिवान बन सकते हैं और न विवेकवान। प्रचलित मूढ़ता को

बदलने के लिए प्रयत्न करना आज की स्थिति में हिंदू जाति की व भारतीय समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण सेवा मानी जाएगी।

आवश्यकता इस बात की है कि हम में से प्रत्येक यह प्रण कर ले कि वह अपने पुत्र के विवाह में कोई दहेज स्वीकार न करेगा और उत्सव का स्वरूप छोटे से छोटा और पूर्ण सादगी का रखेगा। जब तक यह स्थिति सुधरने में नहीं आती तब तक उसे लड़की को कुछ देने के बारे में या उत्सव का स्वरूप बनाने में लड़के वालों की मरजी पर चलने को विवश होना पड़ता है। इसलिए फिलहाल उसमें कुछ ढील भी रखी जा सकती है। पर लड़के के विवाह में ऐसी कोई विवशता नहीं है। लड़के वाले ऐसा साहस और त्याग करना चाहें तो उन्हें किसी प्रकार की कोई कठिनाई सामने न आएगी। अनेकों लड़की वाले उनकी घोषणा का स्वागत करने को तैयार होंगे। इसी प्रकार लड़कियों पर लड़कों से दहेज लेने की प्रथा जिन पर्वतीय एवं आदिवासी लोगों में प्रचलित है वहाँ लड़की वाले यदि दहेज न लेने की घोषणा करें तो अनेक लड़के वाले उनका स्वागत एवं सहयोग करने के लिए आगे उपस्थित होंगे। जिसको दहेज नहीं लेना है उसी को त्याग करने के लिए आगे बढ़ना होगा। पहल करने की जिम्मेदारी उसी की है।

वाक् शूरता का युग चला गया, अब हमें कर्मवीर बनना चाहिए। जिन विचारों को सही मानते हैं उन्हें व्यवहार में लाने का साहस भी होना चाहिए। यह मनुष्यता की मानवीय अंतरात्मा का अपमान है कि जिस बात को मनुष्य ठीक समझे उसे कार्यान्वित करने-कराने के लिए साहस करने में न हिचकिचाए। कायरता एवं भीरुता इसी को तो कहते हैं। हमें न तो कायर बनना चाहिए और न भीरु। वरन एक ईमानदार, सहृदय, सच्चरित्र और साहसी व्यक्ति की तरह जो बात विवेकयुक्त है उसे अपनाने के लिए हिम्मत के साथ आगे बढ़ना चाहिए। लोग हँसी या विरोध करेंगे, इसकी तनिक भी परवाह नहीं की जानी चाहिए।

कुमार्ग पर चलते हुए लोक निंदा का ध्यान रखना चाहिए, पर सत्य और विवेक की दिशा में कदम बढ़ाते हुए सारा संसार एक ओर हो तो भी अकेले चल पड़ने की हिम्मत रखनी चाहिए। मनुष्यता का गौरव ऐसे ही साहस में सन्निहित है।

प्रसन्नता की बात है कि ऐसी विवेकशीलता हमारे समाज में तेजी से जाग्रत हो रही है। अनेकों व्यक्ति ऐसे साहसिक कदम उठा रहे हैं। भेड़चाल चलने वाले जहाँ घुस-पुस विरोध करते हैं वहाँ अगणित विवेकशील उस साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा भी करते हैं और उन अग्रगामी लोगों की हिम्मत के पीछे वातावरण बदल जाने एवं कुरीतियों के टूट जाने की संभावना का दर्शन करते हैं। ऐसे हर साहसी के ऊपर अनेकों अभिभावकों एवं कन्याओं का अदृश्य आशीर्वाद बरसता है, क्योंकि वे उद्धारकर्ता देवदूत के रूप में उनकी कठिनाइयों के समाधान का द्वार खोल रहे हैं।

समाचार पत्रों में कभी-कभी ऐसे साहसिक समाचार छपते रहते हैं। यों सभी घटनाओं का न तो पता चलता है और न वे अखबारों तक पहुँच पाती हैं, पर जो छपती हैं वे भी सर्वसाधारण के मन में आशा और उत्साह का संचार करती हैं। अनेक आदर्शवादियों ने यह मार्ग अपनाया है। कुरीतियों ने उनके पाँव जकड़ने की कोशिश की है तो उन्होंने उनको तोड़ फेंकने का भी साहस किया है। घर वालों से लेकर भेड़चाल के समर्थक कापुरुषों के मिमियाने की परवाह न करते हुए जो लोग आदर्शवादिता के पथ पर बढ़ चलते हैं उनसे लोगों को बड़ी प्रेरणा मिलती है। पिछले दिनों छपे हुए कुछ समाचारों के अनुकरणीय उदाहरण आगे देखिए।

❐

आदर्शवादिता की ओर बढ़ते हुए कदम

दहेज में सिर्फ एक रुपया—काशीपुर। नगर के एक वैश्य परिवार में हुई आदर्श शादी की यहाँ चर्चा है। इस विवाह में वर-पक्ष वालों ने सिवाय एक रुपये के दहेज के और कुछ नहीं लिया। यह शादी नगर के श्री वी.एम. गुप्त की सुपुत्री कु. गिरजेश गुप्त व सरसावा (जि. सहारनपुर) के श्री पूर्णप्रकाश गोयल की हुई। वर तथा वधू दोनों ही उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। इस बरात में भी केवल नौ व्यक्ति आए थे।

मालिक के लड़के का मुनीम की लड़की से विवाह—डबरा। स्थानीय प्रसिद्ध फर्म श्री नरेंद्रलाल एंड कं. के मुनीम श्री जेठालाल जी की सुपुत्री नयना कुमारी (हायर सेकेंडरी उत्तीर्ण) का पाणिग्रहण संस्कार इसी फर्म के मालिक श्री सेठ केशवलाल के सुपुत्र श्री रमेशलाल बी.एस-सी. के साथ बिना किसी दहेज-आडंबर के, पूर्ण सादगी के साथ संपन्न हुआ। फर्म के मालिक श्री केशवलाल ने दहेज इत्यादि के लोभ को तिलांजलि देकर अपने ही एक छोटे कर्मचारी की पुत्री को वधू रूप में स्वीकार किया। इस आदर्शवादिता के लिए सर्वत्र उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है।

पूर्ण सादगी के साथ विवाह—रघुराजपुर (फतेहपुर) में युग निर्माण योजना से प्रभावित होकर परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता कुंवर उदय भानु सिंह ने अपने भतीजे की शादी में पूर्ण सादगी और मितव्ययिता की व्यवस्था रखी, किसी प्रकार का दहेज स्वीकार नहीं किया गया। कन्या पक्ष का कुल व्यय १०० रुपये से भी कम हुआ। इस आदर्श विवाह का इस क्षेत्र में बहुत प्रभाव पड़ा है। दूसरे अनेक लोग भी अब ऐसा ही अनुकरण करेंगे।

अढ़ाई रुपये में विवाह—सुजानगढ़ के एक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ ने अपनी सुपुत्री का विवाह सादगी से किया। वर तथा वधू दोनों की ओर से दहेज प्रथा को समाप्त करने की घोषणा की गई। फलस्वरूप 'मद्दे' के रूप में सवा रुपया तथा पहरावनी (विदाई) के अवसर पर सवा रुपया वधू परिवार की ओर से वर परिवार को भेंट स्वरूप दिया गया। इस प्रकार फजूलखरची से बचकर एक आदर्श उपस्थित किया गया।

तीन रुपये में पुत्र का विवाह—सीकर में नगर के प्रमुख वकील श्री प्यारेलाल माथुर ने अपने पुत्र की शादी में केवल ३ रु. खरच किए। अत्यधिक सादगी के साथ श्री माथुर के पुत्र ज्योतिप्रसाद का पाणिग्रहण संस्कार सीकर तहसील के एक गिरदावर श्री नंदलाल की पुत्री के साथ संपन्न हुआ। दहेज तथा अन्यान्य सामाजिक कुरीतियों का तो सर्वथा त्याग किया ही गया था, किंतु गाजे-बाजे तथा घोड़े की सवारी तक का बहिष्कार किया गया। दूल्हा साधारण वेशभूषा में अपने घर से पैदल ही दुलहन के घर गया। विवाह के पश्चात नव दंपत्ति ताँगे में श्री माथुर के निवास स्थान तक आए और इसी के किराए के तीन रुपये लग गए। लड़की के पिता को जो कुछ व्यय करना पड़ा, वह अतिथियों के स्वागत सत्कार में ही करना पड़ा।

आदर्श विवाह—अलवर में गुजरपाड़ी के ठा. हरनाथ सिंह ने अपनी पुत्री रतनकुमारी का पाणिग्रहण चाँदपुर जिला बुलंदशहर के ठा. मान सिंह के पुत्र जसवंत सिंह के साथ बड़ी सादगी के साथ किया। वर पक्ष ने कोई दहेज नहीं लिया। शादी एक ही दिन में संपन्न हो जाने से लड़की वालों पर भी आर्थिक दबाव नहीं पड़ा। रिश्तेदारों के विरोध का ध्यान न देकर भी दोनों पक्षों ने जो साहस का परिचय दिया है विचारवान लोगों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। लड़का हाईस्कूल पास है और लड़की इस वर्ष हाईस्कूल की परीक्षा देगी। इस विवाह ने

यहाँ के लोगों की आँखें खोल दी हैं। दोनों पक्षों ने यह समझौता युग-निर्माण योजना से प्रभावित होकर किया।

इंजीनियर युवक की आदर्शवादिता—नालागढ़ (अंबाला) में इसी वर्ष इंजीनियरिंग पास करके विद्युत-विभाग में ऊँचे वेतन पर नियुक्त हुए श्री विष्णुकुमार भारती ने एक अशिक्षित और निर्धन परिवार की कन्या से विवाह करके अपने साथियों को आश्चर्य में डाल दिया। युवक ने पाँच वर्ष पूर्व ही यह घोषणा कर रखी थी कि वह किसी गिरी हुई स्थिति की लड़की को ऊँची उठाने और पढ़ाने में अपने दांपत्य-जीवन की सफलता समझेगा। तब यह बात हँसी जैसी मालूम पड़ती थी, पर अब जब कि विवाह का समय आया, तो उन्होंने भारी दहेज और ग्रेजुएट कन्याएँ मिलने के सभी अवसरों को ठुकरा कर एक अशिक्षित, निर्धन और साधारण कन्या के साथ विवाह करने में अपना गौरव समझा। लड़की वाला अंत तक यह विश्वास न कर सका कि उसकी लड़की इतने ऊँचे घर-बार की अधिकारिणी बन सकेगी। इसलिए वह विवाह के दिन तक असमंजस में रहा, पर जब लड़का अपने कुटुंबियों और अभिभावकों की बरात लेकर जा पहुँचा, तभी उसने विश्वास किया और विवाह का सामान मँगाया। लड़की की विदा करते समय उसके माँ-बाप की आँखों में हर्ष के आँसू रोके न रुकते थे। युवक विष्णुकुमार ने विवाह के समय घोषणा की है कि वह इस लड़की को ग्रेजुएट बनने तक स्वयं ही पढ़ाया करेगा और उसे सुयोग्य बनाने में अपने विवाह की सफलता समझेगा।

आदर्श विवाह—चौमुहा (मथुरा) के श्री गोपालप्रसाद वार्ष्णेय का विवाह-संस्कार गांधी आश्रम के ऑडीटर श्री रामजस की सुपुत्री सोमवती के साथ संपन्न हो गया। २५ जनवरी को संबंध तय होकर सगाई लगन की रस्म हुई तथा २६ जनवरी को दहेज रहित विवाह हो गया। इस विवाह में, बारात में बैंड-पार्टी, पटाखे, अनावश्यक रोशनी,

बारातियों की अधिक संख्या, दान-दहेज का मिथ्याडंबर जैसी विकृतियाँ बिलकुल नहीं थीं।

उत्साहवर्द्धक आदर्श विवाह—शाहजहाँपुर के मोहल्ला बजरिया में एक बरात छिबरामऊ से ता. १२ जुलाई को एक गुलहरे वैश्य सज्जन के यहाँ आई। इसमें लड़के वालों की तरफ से किसी प्रकार के दहेज की माँग नहीं की गई और लड़की पर चढ़ाने के लिए आभूषण नहीं लाए, केवल आवश्यक वस्त्र ही दिए गए। इस जाति में समस्त जिले की दृष्टि से यह पहला ही अवसर है, जब कि एक विवाह बिना दहेज और अन्य आडंबर के सादगी के साथ संपन्न किया गया। इसे संपन्न कराने का श्रेय छिबरामऊ के दो धनी मानी प्रतिष्ठित सज्जनों को है जो स्वयं भी बरात में सम्मिलित हुए। उनके शुभ नाम हैं—सेठ राधाकृष्ण जी तथा श्री दयानन्द जी गुप्त।

बिना खरच विवाह—फरीदकोट, यहाँ एक ऐसा आदर्श विवाह हुआ है जिसमें वर-कन्या दोनों पक्षों ने विवाह में होने वाली फजूलखरची का डटकर विरोध किया, फलस्वरूप विवाह पूर्ण सादगी और बिना खरच के हुआ। वर-कन्या ने विवाह से पूर्व ही परस्पर विचार विनिमय द्वारा इस प्रकार का निश्चय कर लिया था। उनकी दृढ़ता के कारण अभिभावकों को धूम-धाम की सारी तैयारियाँ समाप्त करनी पड़ीं। लोक-हित के कार्यों के लिए १५० रु. दान देकर उस विवाह में एक और दूसरा आदर्श उपस्थित किया गया।

केवल सवा रुपये में विवाह संपन्न—हसनपुर (मुरादाबाद) में आदर्श विवाह प्रणाली अपनाने से अभी हाल ही में दो कायस्थ परिवारों का उद्धार हुआ है। कायस्थ समाज के बीच भयानक दहेज प्रथा का बहिष्कार कर श्री तुलसीराम सक्सेना ने अपने पुत्र चि. श्यामसुंदर का विवाह रिटायर्ड पटवारी श्री शिवचरन लाल की सुपुत्री शीलादेवी के साथ संपन्न कर दिया। कन्या के पिता की आर्थिक

स्थिति बहुत शोचनीय थी। धनाभाव के कारण उनकी पुत्री के विवाह में कठिनता हो रही थी। एक दिन एक बस यात्रा में शिवचरन लाल का परिचय गायत्री परिवार के सदस्य श्री तुलसीराम जी से हो गया। उन्होंने शीलादेवी के पिता की व्यथा सुनी और तत्काल अपने सुशिक्षित व रोजगारी पुत्र से उनकी कन्या का विवाह कर लेने का वचन दे दिया। विवाह केवल सवा रुपये में गायत्री-यज्ञ के साथ वरमाला पद्धति से संपन्न किया गया। उक्त अवसर पर क्षेत्र के लगभग सभी संभ्रांत व्यक्तियों ने उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वाद देने के साथ अभिभावकों की बड़ी सराहना की और उक्त विवाह पद्धति का अनुसरण करने का संकल्प किया।

बिना दहेज का विवाह—झाँसी, गायत्री महायज्ञ के अवसर पर बिना किसी प्रकार का खरच किए वर ब्रजभूषण श्रीवास्तव और वधू सुशीलादेवी का विवाह बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। वर के पिता श्री पन्नालाल श्रीवास्तव और कन्या के संरक्षक श्री बाबूराम श्रीवास्तव के साहस की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। उपस्थित जनता में उत्साह और प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। उसी समय लगभग १०० व्यक्तियों ने अपने लड़कों की शादियाँ पूर्ण सादगी के साथ करने की शपथ पूर्वक प्रतिज्ञाएँ भाषण मंच पर खड़े होकर कीं।

हठी पिता का उदार पुत्र—तालेगाँव (महाराष्ट्र) में एक बरात के दूल्हा की उदार सज्जनता से लोग इतने प्रसन्न हुए कि क्षेत्र के लगभग सभी संभ्रांत व्यक्तियों ने उसे कुछ न कुछ भेंट दी। गजाधर भाई नामक वर की जब भाँवरें पड़ने को थीं तब उसके पिता को पता चला कि कन्या के मुँह पर चेचक के दाग हैं जो कि विवाह तय करते समय कन्या के पिता ने नहीं बताए थे।

वर के पिता ने विवाह करने से इनकार कर दिया और बरात वापस करने को तैयार हो गया। पिता को किसी प्रकार न मानते हुए

देख दूल्हा ने कहा कि उन्हें शादी मंजूर है और लड़की कितनी ही असुंदर क्यों न हो वे उसे स्वीकार करेंगे। वे नहीं चाहते कि एक साधारण-सी बात के लिए दो कुलों की बदनामी हो। वर को उद्यत देखकर बिगड़ने वालों को झुकना पड़ा और विवाह बड़े धूम-धाम से हुआ।

दहेज में एक रुपया, बरात में बीस व्यक्ति—सुलतानपुर के प्रतिष्ठित नागरिक एवं विद्यार्थी प्रेस के मालिक श्री बजरंगीलाल विद्यार्थी ने अपने तीन सुशिक्षित एवं सुयोग्य लड़कों का विवाह पिछले दिनों एक-एक रुपया लेकर किया है। उन लड़कों के लिए दस-दस हजार रुपया दहेज देने वाले थे, पर इन्होंने उन सबसे इनकार कर ऐसे घरों से संबंध स्वीकार किए, जो विशेष चिंतित एवं परेशान थे। इन विवाहों में बरात भी बीस-तीस व्यक्तियों से अधिक की नहीं गई। जिन लड़कों के यह विवाह हुए हैं, उनने भी ऐसी ही सादगी की शादी करने की बात अपने अभिभावकों से कह रखी थी।

आदर्श विवाह का उदाहरण—आगरा के दो प्रसिद्ध धनवान व्यवसाइयों ने आदर्श विवाह का उदाहरण उपस्थित किया है। इसमें वर के पिता हैं—नेशनल आयरन फाउंड्री के मालिक श्री बालमुकुन्द जी बल्ला और वधू के पिता हैं—समाज-सेवी व्यवसायी श्री वेदपाल जी गुप्त। इस विवाह में आरंभ से अब तक कोई लेन-देन नहीं हुआ है। केवल एक रुपया वर-पक्ष द्वारा रस्म के तौर पर स्वीकार किया गया है। विवाह के दिन न तो बरात निकाली गई, न दावत दी गई और न किसी प्रकार का दहेज दिया गया। विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न किया गया।

❑

संगठित सत्प्रयत्न

यों आदर्शवादिता के लिए व्यक्तिगत रूप से एकाकी कदम भी उठाए जा सकते हैं और उनका भी सत्परिणाम सामने आता ही है,पर यदि संगठित रूप से कुछ कार्य किया जाए तो उसका प्रभाव इतना अधिक होता है कि अनेकों द्वारा सुधारवादी कदम उठाए जाने लगते हैं और व्यापक वातावरण बनने में सुविधा रहती है। संगठित प्रयत्नों की सफलता अधिक निश्चित रहती है। इसलिए विवाहोन्माद का उन्मूलन करने के लिए सर्वत्र संगठित प्रयत्न किए जाने चाहिए। किसी सुधार को देशव्यापी रूप देना हो तो उसके लिए संगठित प्रयत्नों की अनिवार्य आवश्यकता होगी। इस तथ्य को अनुभव करते हुए विचारशील लोग समाज सुधार कार्यों के लिए किस प्रकार संगठित प्रयत्न कर रहे हैं इसकी एक झाँकी कुछ समाचारों में नीचे देखिए—

जाट पंचों का सराहनीय निर्णय—मेरठ क्षेत्र की जाट जाति के पंच चौधरियों की एक बड़ी पंचायत ने फैसला किया है कि बरात में ५ व्यक्ति जाएँ। ज्योंनार में मिठाई न परोसी जाए। तथा गाजे-बाजे का अनावश्यक खरच बिलकुल न किया जाए। इस निश्चय के अनुसार इस क्षेत्र में पिछले दिनों हजारों विवाह हो चुके हैं। इनमें दहेज की कोई चर्चा नहीं होती। इस सुधारवादी प्रथा के प्रचलन से जाट जाति को उत्साहवर्द्धक सुविधा हुई है। सभी लोग बड़े झंझट से छुटकारा पा लेने के कारण प्रसन्न हैं। अब अन्य बिरादरी के लोग भी ऐसा ही सुधार अपने-अपने यहाँ करने के लिए पंचायतें बुलाने की तैयारी कर रहे हैं।

छात्रों में उत्साह—कलकत्ता में समाज सुधार दल के तत्वावधान में एकत्रित एक सभा में स्थानीय स्कूलों के ४०० छात्रों ने दहेज उन्मूलन आंदोलन में सक्रिय भाग लेने का निश्चय किया है। जो अविवाहित हैं वे आदर्शवादी रीति से अपना विवाह करेंगे। उपस्थित

छात्रों ने अपने सहपाठियों को उसी भावना से प्रभावित करने के लिए भरसक प्रयत्न करने का भी निश्चय किया है। समाज सुधार दल अब प्रत्येक सप्ताह ऐसी ही सभाओं का आयोजन किया करेगा। उसे अपने उद्देश्य की महानता और प्रयत्न की सफलता पर बहुत विश्वास है।

समाजसेवियों की टोलियाँ—पूना के समाजसेवकों ने दहेज की कुरीति से समाज को मुक्त करने के लिए एक रचनात्मक कदम यह उठाया है कि वे चार-चार की टोली बनाकर वयस्क छात्रों में संपर्क बनाने और उन्हें विवाह में होने वाले अपव्यय की हानियाँ समझाया करेंगे। जो छात्र इस विचारधारा से प्रभावित एवं सहमत होंगे, दूसरी टोली उनके अभिभावकों से मिला करेगी और इस सुधार से सहमत होने की प्रेरणा दिया करेगी।

हर टोली दस व्यक्तियों से प्रतिदिन मिलने का कार्यक्रम लेकर चलेगी। सायंकाल के तीन घंटे इसके लिए टोलियों ने नियत किए हैं। १६ समाजसेवियों ने चार-चार की चार टोलियाँ बना ली हैं। भाषण न देकर व्यक्तिगत विचार-विमर्श की शैली उनने अपनाई है। इस प्रकार यहाँ चार टोलियाँ प्रतिदिन ४० व्यक्तियों से संपर्क बनाकर महीने में लगभग एक हजार और वर्ष में बारह हजार व्यक्तियों से संपर्क बनावेंगी। टोलियों को आशा है कि वे एक वर्ष में १००० व्यक्तियों को आदर्श विवाह के लिए सहमत अवश्य कर लेंगी।

जेवर कपड़ों का अपव्यय रुका—सोनगढ़ (सौराष्ट्र) में अभी हाल ही में कृषक जातियों ने कुप्रथाओं के विरोध में सक्रिय कदम उठाए हैं। सौराष्ट्र की कणवी और अहीर आदि जातियों में सोने-चाँदी के गहने और बहुत बड़ी संख्या में कीमती कपड़ों का ब्याह-शादी में वर-वधू दोनों पक्षों की ओर से प्रस्तुत किया जाना विवाह-संस्कार का एक प्रमुख अंग माना जाता था। कर्ज लेकर और अपना

आर्थिक संतुलन बिगाड़कर विवाह की यह परंपरा पूरी करनी ही पड़ती थी। अब वहाँ की उक्त जातियों ने इस प्रथा से होने वाली हानियों को अनुभव कर लिया और इसे रुकवाने के लिए सक्रिय आंदोलनों की शुरुआत कर दी है और ब्याह-शादी बहुत ही थोड़े व्यय में सादगी के साथ होना प्रारंभ हो गया है।

गुजराती समाज में सामूहिक विवाह—यवतमाल के कुछ उत्साही और तरुण गुजराती सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने गुजराती समाज में सामूहिक विवाह प्रथा शुरू करने का निर्णय किया है। इस विवाह समारोह में प्रत्येक पक्ष से नाममात्र का शुल्क १०१ रुपये लिया जाएगा। विवाहों में होने वाले अनावश्यक खरच को टालने तथा बढ़ती हुई मँहगाई से उत्पन्न कठिन स्थिति का सामना करने और लोगों में भाईचारे की भावना का निर्माण करने के उद्देश्य से यह योजना अपनाई गई है। इस योजना के प्रवक्ता ने बताया कि आजकल धनी लोगों को भी विवाह का भारी व्यय-खरच जान पर आ रहा है। उक्त योजना के अंतर्गत लोहाना, महाजनवाड़ी, यवतमाल में तीन विवाहों का आयोजन किया गया।

आदर्श सामूहिक विवाहों का निर्णय—मोहनपुर सराय (उ.प्र.) विवाहों में होने वाले व्यर्थ खरच,समय और झंझट बचाने के लिए यहाँ के विविध वर्गों के लोगों ने सामूहिक आदर्श-विवाहों का निश्चय किया है। सामूहिक विवाहों की कार्य-विधि आयोजित करने के लिए एक कमेटी बनाई गई है, जो आदर्श-विवाहों के लिए प्रचार करेगी और निश्चित समयों पर सामूहिक विवाहों का संपादन करेगी। इन सामूहिक विवाहों में सम्मिलित होने वाले लोगों को केवल आवश्यक सामग्री और कमेटी को एक-एक रुपया दक्षिणा देनी होगी। एक ही यज्ञशाला में एक ही समय सारे वर-वधू अपनी-अपनी संस्कार प्रक्रियाओं को पूर्ण करेंगे। इस प्रकार बहुत ही कम व्यय में, एक ही समय में बहुत से विवाह हो जाया करेंगे।

विवाहों में सभी प्रकार के भोज बंद—झालदा (मारवाड़) में मारवाड़ी समाज के बंधुओं की एक सभा में सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया—देश की वर्तमान खाद्य परिस्थिति को देखते विवाहों के अवसर पर होने वाले सभी तरह के भोज, बानाबटेरा, दिखावा एवं प्रदर्शन पूर्णतया बंद रहेगा। बरात में कम से कम व्यक्ति सम्मिलित होंगे। झालदा में रस्ता-गीत पहले से ही बंद हैं। उपर्युक्त नियमों का जो भी व्यक्ति उल्लंघन करेगा उसका स्थानीय समाज पूर्णतः बहिष्कार कर देगा।

विवाह सादगी से होंगे—अहमदाबाद के आस-पास के गाँवों में बसने वाले पाटीदार जाति के पंचों ने खाद्यान्न की परिस्थिति को देखते हुए लगन-समारोह बिलकुल सादगी से संपन्न करने का निर्णय किया है। पंचों की यहाँ जो बैठक हुई, उसमें निर्णय किया गया कि लड़के की बरात में केवल पाँच व्यक्तियों को ही ले जाया जाए। इस नियम का कड़ाई से पालन करने के लिए पंचों ने शपथ भी ली। गुजरात में लगन-समारोह के पीछे इस जाति के लोग सबसे अधिक खरच करते हैं। इन लोगों ने संकटकालीन परिस्थितियों को देखते हुए यह निर्णय किया है।

विवाह में ४१) से अधिक खरच न हो—राजकोट (सौराष्ट्र) में जहाँ पहले ब्याह-शादियों में स्थानीय जैनी बहुत अधिक दिखावा और व्यय के साथ उत्सव किया करते थे और उसमें अपना बड़प्पन समझा करते थे, वहाँ अब नवोदित और शिक्षित जैन युवकों ने इस प्रथा में समुचित सुधार करना शुरू कर दिया है। स्थानीय 'जैन युवक मंडल' ने निश्चित किया है कि वे अब शादियों के अवसर पर होने वाले निरर्थक अपव्यय को हर प्रकार से रोकने का प्रयत्न करेंगे और यदि आवश्यकता हुई तो इसके लिए अपने अभिभावकों का भी विरोध करने में संकोच न करेंगे। उन्होंने निकट भविष्य में होने वाली अनेक शादियों

में अपने नवीन विचारों को कार्यान्वित करने के लिए सारे खरच की सूची ४१ रुपया बनाकर वर-कन्या के अभिभावकों को इस सूचना के साथ दे दी है कि यदि इन आवश्यक खरचों के अतिरिक्त अनावश्यक व्यय किया गया तो 'जैन युवक मंडल' उसका विरोध करेगा। युवकों का उत्साह देखकर अभिभावक सहमत होने लगे हैं।

लड़के के विवाह में पूर्ण सादगी—सिकंदरपुर (बलिया) के शाखा सदस्यों ने देवोत्थान एकादशी के दिन गायत्री यज्ञ करके अग्नि-देवता की साक्षी में यह प्रतिज्ञा की है कि वे अपने लड़कों के विवाह में न किसी प्रकार का दहेज लेंगे और न जेवर आदि चढ़ाने का दिखावा करेंगे। बरात में २५ व्यक्ति से अधिक नहीं ले जाएँगे और हर प्रकार की सादगी बरतेंगे।

दहेज न लेने का प्रशिक्षण—लालगाँव (पंजाब) में एक सामूहिक यज्ञ अनुष्ठान के अवसर पर वेद विद्वान श्री त्रयंबक जी अत्रि ने विवाहों में प्रचलित खरचीली प्रथा का विरोध किया और उपस्थित जनता से इस अधार्मिक कृत्य को बंद करने का अनुरोध किया। और भी कई वक्ताओं ने विवाह के खरचीलेपन के कारण होने वाले अनेकों दुष्परिणामों को मार्मिक ढंग से समझाया। उपस्थित व्यक्तियों ने, लगभग २५० ने खड़े होकर सूर्यनारायण और यज्ञ भगवान की साक्षी में यह प्रतिज्ञा की कि वे अपने पुत्रों के विवाह में कदापि दहेज स्वीकार न करेंगे और आदर्श विवाह विधि से ही शादियाँ करेंगे।

कलाकारों का सहयोग—कटक, उड़ीसा में स्थानीय कलाकारों की एक वृहद् गोष्ठी का आयोजन किया गया। संयोजक श्री सोमाजी कानजी परमने ने उपस्थित संगीतज्ञों, चित्रकारों, कवियों, अभिनयकर्त्ताओं एवं लेखकों से यह अनुरोध किया कि वे अपनी कला का उपयोग दहेज उन्मूलन जैसी सामाजिक क्रांति की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए करना आरंभ करें। अनुरोध से सभी बहुत प्रभावित हुए और

निश्चय किया कि हर एक इस दिशा में कुछ ठोस काम करना आरंभ करेगा। कवि कविता में, चित्रकार सामाजिक कुरीतियों के दुष्परिणामों का चित्रण करेंगे, गायक उस प्रकार के गीत गाया करेंगे और अभिनयकर्त्ता कुछ नाटकों की तैयारी करेंगे, जिसमें जनता का सोया हुआ विवेक जागे। अगले दिनों एक प्रदर्शनी, एक कवि सम्मेलन, एक नाटक जनता के सामने प्रस्तुत करने की तैयारी आरंभ कर दी गई है।

आंदोलन के लिए आर्थिक सहायता—खिदिरपुर, बंगाल में दहेज विरोधी आंदोलन की महत्ता को समझने वाले कुछ धनी लोग अपने व्यक्तिगत कमजोरियों के कारण स्वयं तो पहल नहीं कर पा रहे हैं, पर वे चाहते हैं कि यह आंदोलन पनपे और सफल बने। इसके लिए उन्होंने आर्थिक सहयोग देने का वचन दिया है। विवाह योग्य छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों में प्रसारित किए जाने के लिए साहित्य का साधन जुटाने के लिए ५०० रु. मासिक और आंदोलन के लिए भ्रमण करने तथा आवश्यक व्यय जुटाने के लिए ५०० रु. दोनों मदों में १००० रु. मासिक खरच करने का निश्चय किया है। सुधारवादी इन धनी व्यक्तियों ने सौ-सौ रुपये मासिक अपने पास से देते रहने और १००० रुपये मासिक की व्यवस्था आंदोलन को गतिशील बनाने के लिए सदा करते रहने का निश्चय किया है।

सामूहिक विवाहों का प्रचलन—एक स्थान पर एक ही दिन में कई विवाह आदर्श रीति से होने लगें तो उसमें वह सम्मिलित उत्सव बहुत ही आकर्षक बन सकता है। उस आयोजन का प्रदर्शनात्मक और प्रचारात्मक स्वरूप भी बहुत अच्छा बन जाता है। जनता भी बड़ी संख्या में उसे देखने आती है। जो देखते हैं वे प्रभावित होते हैं और दूसरों से चर्चा करते हैं। फलस्वरूप वातावरण बनता है, वैसा करने का साहस उत्पन्न होता है और अनुकरण करने की आकांक्षा अनेकों के मन में जाग पड़ती है। इसलिए जहाँ भी संभव हो। आदर्शवादी विवाहों के

सामूहिक आयोजन किए जाने चाहिए। इस दिशा में कुछ प्रयत्न हो भी रहे हैं, उनके कुछ समाचार नीचे देखिये—

आनंद विवाह प्रथा की शताब्दी—फीरोजपुर (पंजाब) के नामधारी सिक्ख संप्रदाय के गुरु पं. रामसिंह जी ने सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में कई एक सुधार किए थे। अपने अनुयायियों में सामूहिक विवाहों की एक कम खरचीली और आडंबर रहित 'आनंद पद्धति' प्रथा प्रचलित की थी। इस पद्धति के अनुसार एक स्थान पर, एक ही दिन अनेकों विवाहों का आयोजन होता है। इस अवसर पर 'कड़ाह' प्रसाद और हवन आदि पर होने वाले खरच के लिए वर और वधू पक्ष पचास रु. से लेकर एक सौ इंक्यावन रुपया तक भेंट देते हैं। उन्हें कोई दहेज लेना-देना नहीं होता। निर्धनों से रुपया की यह भेंट भी नहीं ली जाती। वधू घूँघट नहीं निकाल सकती। उसके लिए स्वर्ण-आभूषण भी वर्जित हैं। प्रचलित 'आनंद विवाह पद्धति' प्रथा के अनुसार हर साल बड़ी संख्या में सामूहिक विवाह होते रहे हैं। अब इस पुण्य प्रथा के प्रचलन को पूरे सौ वर्ष हो जाने पर नामधारी सिक्खों ने उसका शताब्दी समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया है।

एक साथ ६०० विवाह—बीकानेर में पुष्करणा ब्राह्मण जाति में ४ वर्षों बाद ६०० कुँवारों ने इस वर्ष गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। इस प्रकार का समारोह अब पुनः चार वर्ष बाद ही आयोजित किया जा सकेगा। चार साल में एक बार आने वाले इस विवाह पर्व के अवसर पर विभिन्न स्थानों से लगभग ५ हजार पुष्करणा लोग यहाँ एकत्रित हुए और उन्होंने सामूहिक वातावरण में बड़ी सादगी के साथ इतने विवाह एक ही दिन में संपन्न कर डाले।

पुष्करणा समाज के विचारशील लोगों ने बहुत पहले ही सामूहिक विवाहों की उपयोगिता जान ली थी, इसलिए उन्होंने एक ही समय एक साथ अनेक विवाहों की बड़ी सुविधाजनक परिपाटी प्रचलित की

थी। इस अनुकरणीय प्रथा से इस समाज के लोगों को बहुत सुविधा रहती है।

सामूहिक विवाहों का आयोजन—कुछ समय पूर्व भरतपुर की कामा तहसील में खंडेलवाल महासभा द्वारा सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया था। दहेज प्रथा तथा फजूलखरची का बहिष्कार करके १२ विवाह संपन्न हुए। इसी प्रकार उपर्युक्त महासभा ने आगरा में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया था, जिनमें कन्यादान का एक रुपया मात्र दहेज दिया था। इस अनुकरणीय उदाहरण के प्रति अन्य जातियों के लोगों में भी गहरी दिलचस्पी उत्पन्न हुई थी।

माथुर वैश्यों में सामूहिक विवाह—फीरोजाबाद (आगरा) में माथुर वैश्य सुधार समिति बहुत दिनों से यह प्रयत्न कर रही है कि विवाहों में होने वाले धन और समय के निरर्थक अपव्यय को रोकने के लिए कुछ ठोस और कारगर कदम उठाए जाएँ। इसलिए उसने सामूहिक विवाह आंदोलन के लिए कई वर्ष से बड़ा सराहनीय और सफल प्रयत्न किया है। कुछ समय पूर्व आगरा में एक बड़ा समारोह इसी उद्देश्य से हुआ था, जिसमें कितने ही सामूहिक विवाह हुए। अब इस वर्ष फीरोजाबाद में माथुर वैश्य समाज का एक बड़ा उत्सव आयोजित किया गया, जिसमें लगभग १० हजार जनता की उपस्थिति में ९ विवाह सामूहिक रीति से संपन्न हुए। हर विवाह में ११ रुपये मात्र खरच हुए। इस समारोह का हृदयग्राही दृश्य देखकर अन्य जातियों के लोग भी ऐसा ही अनुकरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

❐

विद्रोह की प्रतिक्रिया

जैसे-जैसे विवेकशीलता और दूरदर्शिता जाग्रत होती चल रही है वैसे-वैसे दहेज एवं विवाहोन्माद के विरुद्ध घृणा एवं रोष की भावनाएँ बढ़ती जा रही हैं। मूढ़तावादी न तो समय की माँग को देखते हैं और न युग की आवश्यकता को, वे अपनी हठवादिता पर ही अड़े रहते हैं। अविवेकयुक्त हठ, सदा विपरीत प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। उसकी उपेक्षा एवं अवहेलना की जाने लगती है। यह स्वाभाविक भी है। विद्रोह के बिना जड़ जमाए बैठी हुई रूढ़िवादिता मिटती भी नहीं। जो इन कुरीतियों को जारी रखने के पक्ष में हैं और स्वार्थ एवं अज्ञान में अंधे होकर हठ समर्थन करते रहते हैं, वे देखें कि कितना तीव्र रोष जन साधारण में छाया हुआ है और किस तरह इन कुरीतियों को तोड़ मरोड़कर रख देने के लिए लोग व्याकुल हैं। नीचे के समाचार हम ध्यानपूर्वक पढ़ें और सोचें कि समय रहते अपने विचारों को बदल लेना ही श्रेयस्कर है।

आदर्शवादी युवक का साहस—जौनपुर में एक संभ्रांत परिवार के सुशिक्षित कान्यकुब्ज युवक ने असाधारण साहस का परिचय देकर अपनी सहृदयता का जो परिचय दिया है उसका प्रभाव दूसरे युवकों पर भी बहुत पड़ा है। कान्यकुब्ज समाज में दहेज का प्रचलन बहुत है। इससे लड़की वालों को बेतरह उत्पीड़न सहना पड़ता है। वस्तुस्थिति से क्षुब्ध होकर लड़के ने निश्चय किया कि वह निर्धन घर की लड़की से बिना किसी प्रकार के दहेज का ही विवाह करेगा। लड़के के अभिभावक लंबी-चौड़ी रकमें तय करके, शादी पक्की करने ही वाले थे कि लड़के ने अपने निश्चय की सूचना स्पष्ट शब्दों में पूर्ण दृढ़ता के साथ दे दी और कह दिया कि वह उनकी हर सेवा करने और बात मानने को तैयार है पर दहेज जैसे अनैतिक कार्य में भागी होकर वह अपनी

आत्मा का हनन न करेगा। कुछ दिन घर वाले उससे बहुत क्रुद्ध रहे और भली-बुरी कहते रहे। पर जब वह टस से मस न हुआ तो घर वाले पसीज गए और लड़के की इच्छानुसार बिना दहेज गरीब घर की शादी करने की व्यवस्था बना रहे हैं।

पुत्र की दृढ़ता, पिता की मजबूरी—अंबरनाथ (महाराष्ट्र) के बसंत जोशी नामक एक प्रगतिशील ब्राह्मण युवक ने स्वयं ग्रेजुएट होते हुए भी एक गरीब विधवा की लड़की से बिना कोई दहेज लिए विवाह करके शिक्षित नौजवानों के सामने समाज सुधार का एक आदर्श उपस्थित किया है। कुमारी सुशीला पाठक केवल आठवीं कक्षा तक ही पढ़ी थी किंतु श्री जोशी ने शिक्षा की अपेक्षा उसकी शालीनता को अधिक महत्त्व दिया।

बसंत जोशी के पिता ने इस विवाह का बहुत विरोध किया। वे अपने पुत्र का विवाह लगभग सात हजार का दहेज लेकर एक संपन्न घर में तय कर रहे थे किंतु बसंत इस मामले में अपने पिता से सहमत नहीं हुए। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि दहेज के माध्यम से निश्चित हुए विवाह को वह कदापि स्वीकार न करेंगे। पिता के विवाह में शामिल न होने का निश्चय सुनकर भी जोशी ने अपनी दृढ़ता का परिचय दिया, और जब वह अपने प्रगतिशील मित्रों के साथ जाकर विवाह कर लेने को उद्यत हुए तो पिता को पुत्र के सामने झुकना ही पड़ा।

दहेज विरोधी लड़का गायब—खड़गपुर। बिहारीलाल नामक जिस खत्री लड़के की पुलिस कई दिन से खोज कर रही थी, वह अब सकुशल मिल गया। आशंका यह थी कि बदमाशों ने उसका अपहरण किया है। पर लड़के ने गुम होने का कारण बताते हुए कहा कि घर वाले मेरे विवाह में काफी दहेज लेना चाहते हैं, इसलिए उनने ठहरौनी कर विवाह पक्का कर लिया। पर मुझे दहेज से सख्त नफरत है इसलिए मैंने विवाह से पूर्व गायब हो जाना उचित समझा ताकि दहेज

वाला विवाह न हो सके। यदि फिर कभी दहेज लेकर मेरा विवाह किया गया तो मैं फिर इसी प्रकार गायब हो जाऊँगा और घर वालों का मनोरथ पूरा न हो सकेगा।

लड़की आजीवन अविवाहित रहेगी—मुजफ्फरपुर (बिहार) यहाँ एक कायस्थ परिवार की प्रबुद्ध लड़की ने अपने निश्चय की सूचना घर वालों को देकर उनकी एक बड़ी चिंता दूर कर दी है।

लड़की इंटर पास है और २४ साल की हो चुकी है। विवाह के लिए छह वर्ष से उसके पिता प्रयत्नशील हैं, पर मनमाना दहेज न जुटा सकने के कारण शादी न हो सकी। घर के सभी लोगों के लिए यही एक बहुत बड़ा चिंता का विषय था। सब इसी में घुलते रहते थे। लड़की बहुत दिन तक तो संकोचवश कुछ कह न सकी, पर इस वर्ष उसने खुले शब्दों में यह घोषणा कर दी है कि वह लालची लोगों को अपना जीवन सौंप कर गृहस्थ सुख पाने की अपेक्षा, उनसे दूर रहकर अविवाहित जीवन व्यतीत करना ही श्रेयस्कर समझती है। उसे विवाह करना नहीं है। वह विद्याध्ययन और स्वावलंबन का संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करेगी।

कुछ दिन तक लड़की के निश्चय को घर के लोग तथा संबंधी धृष्टता बताते रहे, पर जब उसने जबरदस्ती करने पर आत्महत्या कर लेने की धमकी दी तो सबको चुप हो जाना पड़ा। अब लड़की बी.ए. कक्षा में पढ़ रही है। आगे वह अध्यापिका या समाज सेविका बनकर अविहित जीवन व्यतीत करेगी।

दहेज न जुटा पाने पर अंतर्जातीय विवाह—बरबोघा (मुंगेर) में अभी हाल में ही यहाँ हुए एक अंतर्जातीय विवाह की समझदार लोगों में बड़ी सराहना की जा रही है। इस विवाह में वर श्री रामचंद्र मिस्त्री और वधू श्रीमती सुमति देवी कुर्मी जाति की है। बताया जाता है कि वधू के प्रगतिशील पिता ने अपनी जाति में व्याप्त दहेज प्रथा के

विरोध में यह कदम उठाया है और वर के पिता ने उनके प्रगतिशील विचारों में सहयोग करने के लिए यह संबंध सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह विवाह-उत्सव आर्य-समाज में पं. विष्णुदयाल के आचार्यत्व में वैदिक विधि से संपन्न किया गया। उक्त अवसर पर नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिए और लोगों को अंतर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरणा दी।

२५ हजार का दहेज ठुकराया—पूर्णिया जिले की चूनापुर स्टेट के श्री सत्यनारायण राय के पुत्र श्री गोविंद राय को उनके विवाह में उनकी हैसियत के अनुरूप २५ हजार रुपया नकद दहेज मिल रहा था। पर उनने उसे पूर्णतया ठुकरा कर नवहटा गाँव निवासी एक बिलकुल गरीब घर की कन्या के साथ विवाह कर लिया। इस विवाह में वर-कन्या के पूर्व परिचय या प्रेम का कतई कोई संबंध न था, यहाँ तक कि एक-दूसरे के बारे में कुछ जानते भी न थे। प्रश्न केवल सिद्धांत का था। दहेज देने वाले लड़की वालों को लड़का यही उत्तर देता रहा है कि आप लोग धनवान हैं, अपने पैसे के बल पर कोई दूसरा लड़का ढूँढ़ सकते हैं, मुझे किसी निर्धन परिवार की लड़की के लिए सहारा बनने दीजिए।

लड़के ने निर्धन परिवार ही अपने लिए उपयुक्त समझा और वहाँ स्वीकृति दे दी। बाद में उसके पिता भी सहमत हो गए और असहमति छोड़ कर वधू को स्वागतपूर्वक घर ले आए।

लड़का आजन्म कुंवारा रहने को तैयार—संग्रामपुर (मुंगेर) के एक प्रतिष्ठित परिवार में लड़की का विवाह था। बरात आई हुई थी। पर लेन-देन के प्रश्न को लेकर चख-चख चलने लगी। लड़की वाले जितना दे रहे थे उससे लड़के वाले संतुष्ट न थे और अधिक मिलने की पेशकश कर रहे थे। लड़का पढ़ा लिखा था। उसे यह बात बुरी लगी और अपना मत व्यक्त किया कि इस प्रकार की अनैतिक सौदेबाजी बंद

की जाए। पर उसकी किसी ने न सुनी। निदान लड़का बरात छोड़कर गायब हो गया। बहुत खोजने पर भी वह न मिला तो बरात को वापस लौटना पड़ा।

कहते हैं कि लड़के ने यह प्रण कर लिया है कि उसका विवाह बिना दहेज के होगा तो ही करेगा, अन्यथा सदा कुमार बना रहेगा।

छात्रों द्वारा अभिभावकों को सूचना—बार्शी (शोलापुर) में तिलक विद्यालय के छात्रों ने दहेज और विवाहों में होने वाले अपव्यय की हानियों को समझ लेने के उपरांत यह निश्चय किया है कि जब उनका विवाह होगा तो वे किसी प्रकार का दहेज स्वीकार न करेंगे। कोई लड़का अपनी ससुराल वालों से किसी प्रकार के उपहार की माँग भी न करेगा। घर वाले कुछ ठहराव करेंगे तो उसका विरोध करेगा और इस प्रकार के विवाह को अस्वीकृत कर देगा।

लड़कों ने अपने-अपने अभिभावकों को अपने इस निश्चय की लिखित सूचना दे दी है, ताकि विवाह का अवसर आने पर वे पहले से ही इस बात को ध्यान में रखे रहें।

कम पढ़े और छोटी आयु के वर से शादी—सावंत वाड़ी (रत्नागिरी) में कुमारी शांती उपाध्याय ने अपने अभिभावकों की विवाह संबंधी एक बड़ी चिंता को दूर करके उच्च शिक्षित कन्याओं के सामने एक नया आदर्श रखा है। श्री शांती जी एम. ए. बी. एड. पास हैं, वे स्थानीय कन्या महाविद्यालय में प्रोफेसर का काम कर रही थीं। आयु ३० वर्ष से अधिक हो चली थी। उपयुक्त लड़का ढूँढ़ने में घर वाले बहुत परेशान थे। छोटी आयु के लड़के बड़ी लड़की से विवाह करते न थे, फिर उतने शिक्षित लड़कों की दहेज संबंधी माँग भी बहुत थी। समस्या सुलझती न देखकर लड़की के घर वाले अक्सर चिंतित रहा करते थे। इस समस्या को सुलझाने में लड़की ने साहस से काम लिया और पोस्ट ऑफिस में काम करने वाले एक मैट्रिक पास क्लर्क से, जो

तीन वर्ष छोटा भी था, शादी करना स्वीकार कर लिया। विवाह के बाद लड़की ने अपने पति की नौकरी छुड़ा दी और उसे कॉलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए दाखिल करा दिया है। लड़की उसे अपने बराबर ही शिक्षित बनाने तक सारा खरच स्वयं वहन करेगी।

लड़की का साहस—राज महल (संथाल परगना) की एक लड़की ने अपने साहस के बल पर अपने गरीब पिता को एक बड़ी आर्थिक कठिनाई से छुटकारा दिला दिया। लड़की की शादी पड़ोस के गाँव में पक्की हुई थी। पर लड़के का बाप दहेज में इतना पैसा माँग रहा था, जो लड़की के पिता के लिए जुटाना कठिन था। बेचारा इसी कठिनाई में घुला जा रहा था।

लड़की ने अपने भावी पति को संदेश भेजा कि क्या वह उसे बिना दहेज के भी स्वीकार करने को तैयार है। लड़के ने वैसा ही वचन दे दिया। इस पर लड़की स्वयं भावी पति के घर चली गई और लड़के के आग्रह पर वहाँ उसी दिन उसका विवाह भी हो गया।

सुसराल वाले पहले तो लड़की के इस दुस्साहस पर खफा हुए किंतु पीछे लड़के का रुख देखकर उन्हें विवाह की तैयारी करने को मजबूर होना पड़ा। आस-पास के लोगों में इस घटना को काफी महत्त्व दिया जा रहा है।

जैसे को तैसे मिल गए—इलाहाबाद। यहाँ के एक सुधारवादी अग्रवाल धनी सज्जन दहेज के नाम पर नकदी तो न लेना चाहते थे पर कीमती सामान प्राप्त करके अपना लालच पूरा करने के फेर में थे। जौनपुर के एक दलाल महोदय वस्तुस्थिति को समझ गए और उनने उनकी मनमरजी की शादी करा देने का वायदा कर लिया। किंतु जो सामान चाहिए उसकी लिस्ट लिखकर देने को उनसे कहा ताकि बात याद रहे और वायदे में भूल न पड़े।

संबंध एक जगह पक्का करा दिया गया। प्रारंभिक रस्म में जो माँगा गया था वह सामान भेज दिया गया। पर जो सामान लड़की वालों

के यहाँ मिलने वाला था उसमें बहुत चालाकी की गई। चाँदी और पीतल के बहुत से बरतनों की लिस्ट थी। यह बरतन बहुत छोटे-छोटे बनवाए गए। एक-एक तोले-तोले के। पीतल के बरतन जो लड़कियों के लिए गुड़िया खेलने के बिकते हैं उनको एक डिब्बा में रख लिया गया। वह चीजें भेंट की गईं तो वर के पिता बहुत लाल-पीले हुए। कन्यापक्ष के कितने ही संभ्रांत लोग आए और बरात के भले आदमियों से झंझट निपटा देने को कहा। पंचायत बैठी। लालाजी के हाथ की लिखी लिस्ट पेश की गई। चीजें सभी थीं। तोल का कोई उल्लेख लिस्ट में न था। ऐसी दशा में उनका नाराज होना क्योंकर उचित हो सकता है ? यह पूछने पर बरात के मसखरे लोग भी लड़की वालों की बात का ही समर्थन करने लगे।

निदान चाबी वाली खिलौना मोटर, आठ आने वाला नकली रेडियो, एक आने वाली घड़ी आदि सामान लेकर बरात को विदा होना पड़ा। दिल्लगी ऐसी रही कि महीनों तक लोग हँसते-हँसते लोट-पोट होते रहे।

दहेज के कारण होने वाली दुर्घटनाएँ—ऐसी कितनी ही घटनाएँ सुनने में आती रहती हैं जिनमें दहेज की रकम तो दे दी जाती है पर पीछे उसके लिए लिया गया कर्ज चुकाने के लिए लड़की पर चढ़ाया हुआ जेवर गिरवी रख दिया जाता है, बेच दिया जाता है, या चोरी होने का बहाना कर दिया जाता है।

सभी लड़की वाले कमजोर नहीं होते जो अपनी लड़कियों पर अत्याचार सहते रहें। कितनी ही बार वे इतने उग्र भी होते हैं कि दुल्हा, दुल्हे के पिता या उनके घर वालों को नाकों चने चबा दें, और उनकी बदमाशी का ऐसा कठोर प्रतिशोध लें कि तिलमिलाते रह जाएँ। सताया कमजोर को ही जाता है। साहसी और उग्र स्वभाव के लड़की वाले आए दिन ऐसी वारदातें भी करते रहते हैं, जिससे दहेज के लालच की

पूर्ति की अपेक्षा वे अनेक गुने घाटे में रहें और लड़की को सताने की सोचने तक की हिम्मत न कर सकें।

कभी-कभी अधिक सताए गए, क्षुब्ध व्यक्ति ऐसी अवांछनीय कार्य कर बैठते हैं जिनसे दुर्घटना घटती नहीं वरन और भी बढ़ती है। कुछ ऐसे समाचार देखिए—

दुल्हे के पिता की गरदन मरोड़ कर हत्या—कोटा। अधिकृत रूप से पता चला है कि नयापुरा में कुनाड़ी से आने वाली लोधों की एक बरात में दुल्हे तथा दुल्हन वालों का पुरानी दुश्मनी को लेकर खाने के समय झगड़ा हो गया। क्रोध में आकर लड़की वालों में से एक व्यक्ति ने दुल्हे के बाप की गर्दन मरोड़ दी। इससे वह बेहोश हो गया तथा अस्पताल में जाकर उसकी मृत्यु हो गई।

बरात बिना शादी के लौट गई। पुलिस ने इस संबंध में ८ लोधे गिरफ्तार किए हैं।

लड़के तथा उसके पिता की नाक गई—यहाँ एक क्षत्रिय परिवार की लड़की का विवाह कुछ दिन पूर्व राघोपुर नामक ग्राम में हुआ था। यथाशक्ति दहेज भी दिया गया, पर लड़के वालों को यह अपनी हैसियत से कम लगा। इसी बात पर कहन-सुनन होती रही। झगड़ा बढ़ता रहा। लड़की को तरह-तरह से सताया जाने लगा और अंत में लड़के की दूसरी शादी की तैयारी होने लगी। लड़की से जेवर आदि छीनकर उसके पिता के यहाँ भेज दिया गया।

एक रात को लड़के के घर पर बदमाशों का आक्रमण हुआ। माल तो कुछ नहीं लुटा, पर लड़के तथा उसके पिता की नाक कट गई। इस दुर्घटना का संबंध लड़की के तिरस्कार और दहेज के लालच के साथ जोड़ा जा रहा है। चर्चा है कि यदि अनुचित माँग एवं लड़की को सताने की नीति इन लोगों ने न अपनाई होती तो नाक कटने की दुर्घटना न होती।

❑

आदर्श विवाहों का प्रचलन और प्रगति

मैथिल और जैन समाज के जातीय मेले—दरभंगा (बिहार) के मैथिल ब्राह्मणों का एक सम्मेलन इस जिले में ऐसा होता है, जिसमें बहुत करके विवाह शादियों की समस्याएँ ही निपटाई जाती हैं। इस सम्मेलन का रूप यों एक जातीय मेले जैसा होता है। लोग कई दिन अपने डेरे लगाकर रहते हैं, परस्पर विवाह-शादियों की चर्चा चलाते हैं। कितने ही विवाह संबंध यहाँ पक्के हो जाते हैं और कितनी ही पक्की की हुई सगाइयाँ इसी अवसर पर विवाह रूप में परिणत हो जाती हैं।

इसी प्रकार का एक जैन समाज का मेला मध्य-प्रदेश के सोनागिर स्थान पर होता है। जिसमें तीर्थ यात्रा में अतिरिक्त इस समाज के लोग अपने बच्चों की शादियों की समस्याएँ भी सुलझाते हैं। कितने ही विवाह उन्हीं दिनों हो जाते हैं।

यदि ऐसे मेले हर बिरादरी के होने लगें तो उपयुक्त लड़के-लड़की ढूँढ़ने की एक बहुत बड़ी समस्या सुलझ जाए। ऐसे सम्मेलन समाज-सुधार की कई आवश्यकताएँ पूर्ण करते एवं कुरीतियाँ मिटाने में भी सहायक हो सकते हैं। इन मेलों को देखने वाले अन्य जातियों के लोग भी वैसा ही अनुकरण करने की प्रेरणा लेकर जाते हैं।

न लड़की वालों के लिए, न लड़के वालों के लिए, किसी भी पक्ष के लिए दहेज का लालच लाभकर नहीं। दोनों ही पक्षों की इससे अपरिमित हानि है। विवाहोन्माद हिंदू समाज की सबसे घृणित एवं सबसे अनैतिक कुरीति है। ऐसे भयंकर प्रचलन को भी जिस समाज के

लोग सहन करते रहते हैं, उन्हें विवेक और साहस से रहित ही माना जाएगा। हमें अपने ऊपर, अपने समाज के ऊपर यह लांछन नहीं आने देना चाहिए। इसके लिए यही उचित है कि हम सब संगठित रूप से ऐसे समाज की अभिनव रचना में संलग्न हों, जिसमें दहेज जैसी मूर्खतापूर्ण कुरीतियों के लिए कोई स्थान न हो।

❒❒

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)